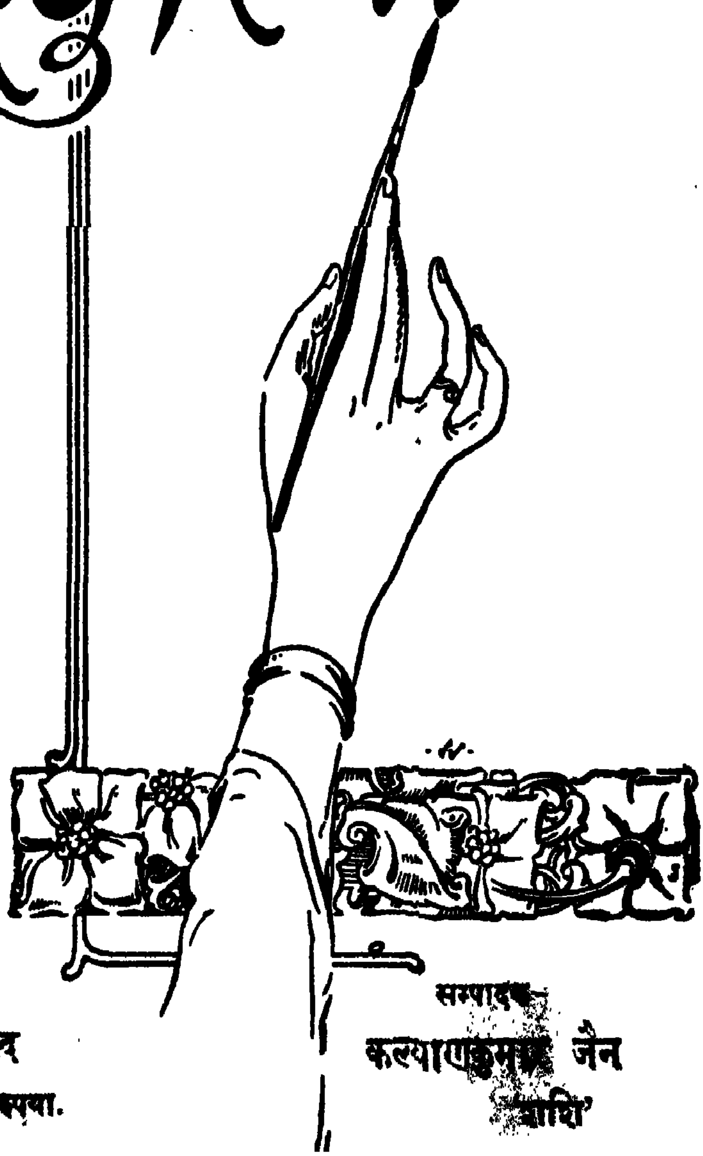
पँखुरियाँ

जैन महिलाओं की चुनी कविताएं



मूल्य सजिल्द
१॥) रुपया.

सम्पादक—
कल्याणकुमार जैन
'शशि'

पँखुरियाँ

(जैन महिलाओं की चुनी हुई कविताएं)

सम्पादक

कल्याणकुमार जैन 'शशि'

प्रकाशक

कविता—मन्दिर

रामपुर स्टेट

मूल्य सजिल्द

१॥) रुपया

प्रकाशक
कविता-मन्दिर
रामपुर स्टेट
यू० पी०

पहिली बार

१९३९

मुद्रक
जगदीश. एम. ए.
प्रदीप प्रेस
मुरादाबाद

पँखुरियाँ

ये 'पँखुरियाँ' हैं उन सुकोमल विकासोन्मुख काव्य कुसुमों की जो अभी तक साहित्य-उद्यान में एकान्त क्यारियों की ही शोभा-वृद्धि करती रही हैं। पहिले पहल इन्हें सरस्वती के आँगन में प्रवेश करने का अवसर मिला है। चाहे उनमें कमल का विकास और केतकी की महक न पाई जाय पर चम्पक सी सुकोमल और भीनी-भीनी सी सौरभ सुन्दरता उनमें मिल जायगी।

कविता शब्दों का कौतुक नहीं, हृदय का व्यापार है। यदि ऐसा स्वीकार किया जाये तो 'पँखुरियाँ' की नवीन कवियित्रियों की रचनायें भी 'कविता' कहलाने की अधिकारिणी हैं क्योंकि निश्चय ही उनमें भावनाभरे भोले हृदयों की भावुक भाषा है जो सभी सजीव काव्य की प्राण मानी जाती है। अलङ्कारों से न लदी हुई होने पर भी 'पँखुरियां' अपने सीधे-सादे और भोले-भाले सौन्दर्य्य के कारण स्वयं ही भावुक पाठक-पाठिकाओं की दृष्टि बरबस अपनी ओर खींच लेंगी।

संकलन-कर्त्ता सम्पादक को बड़ी नाजुक चीजें सजाने को मिलीं। उनको न तो काव्य-शास्त्र के शिकञ्जों में कसा ही जा सकता था, न अलङ्कार रूपकों के बोझ से भूषित

ही। जैसी थीं वैसी ही अछूती-टटकी उन्हें ज़रा यों ही सँवार कर रख देना भर ही सम्भव था और वही उसने किया भी है इस भय से काँपती हुई उंगलियों से कि ज़रा भी कठोर कम्पन से बिखर कर कहीं वे धरती पर न छितरा जायें और फिर केवल रजकणों में ही अपना स्वर्गिक सौरभ फैला कर रह जायें।

पाठक और आलोचक भी इन्हें इसी कोमलता और सावधानी से बर्तेंगे, ऐसी आशा और आग्रह है।

सदियों से सुषुप्त जैन-महिला-समाज का यह जीवन-जागृति-मय उपहार—कोमल काव्य-कुसुमों की ये 'पँखुरियाँ' देश को अपनी भीनी सुकोमल सुरभि से महमहा दें, यही संकलनकर्त्ता की हार्दिक अभिलाषा है। एवमस्तु!

कविता-मन्दिर
रामपुर-स्टेट
१ जुलाई, १९३९

—'शशि'

इन महिलाओं को कवयित्रियाँ बना देने का जो
मूल कारण हैं तथा जिनके प्रोत्साहन द्वारा
यह 'पँखुरियाँ' पनपी हैं उन्हीं —

पूज्यनीया

विदुषी-रत्न, साहित्य-सूरि,



ब्र० चन्दाबाईजी के

कर-कमलों में

सादर

स-म-र्पि-त

—शशि—

प्रस्तावना

जैन कवियित्रियों की हिन्दी कविताओं का यह संग्रह 'पँखुरियाँ' प्रकाशित करके, कविवर कल्याणकुमार जी 'शशि' ने देश की—खास तौर पर जैन समाज की अद्वितीय सेवा की है। इन सब नवीन कवियित्रियों को खोज निकालने का श्रेय भी 'शशि' जी को ही है और मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि यह छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित करके वे ऐसे अनेक काव्य-कुसुमों की रक्षा करने में समर्थ हुए हैं जो शायद अनदेखे-अनजाने ही अपना सौरभ योंही वन की वायु में विलीन कर जाते।

अबला कही जाने वाली नारी-जाति में जन्म लेने के कारण मुझे आज सचमुच ही बड़ा गर्व अनुभव होता है, कि मेरी जैन बहिनें ऐसी उच्च कोटि की, ओजस्वी, प्रेरणामयी, और विचारोत्तेजक रचनायें करने में समर्थ हुई हैं।

क्या राष्ट्र और क्या समाज, सभी के मान और गौरव की अभिवृद्धि में साहित्य का बड़ा महत्वपूर्ण भाग रहा है। आज के ज़माने की सबसे बड़ी माँग भी है कि श्रेष्ठ साहित्य की सृष्टि हो।

मेरी यह सुनिश्चित धारणा है कि 'पँखुरियाँ' इस आवश्यकता की भली भांति पूर्ति करेंगी।

इस छोटी सी पुस्तिका का पारायण करने से सहज ही इस परिणाम पर पहुँचना पड़ता है कि साहित्य के क्षेत्र में भी जिसपर कि आज तक पुरुषों का ही अधिकार रहा है, महिलाएं बहुत कुछ करके दिखा सकती हैं।

अन्तस्थल की सभी भावनाओं के साथ मैं न केवल जैन-बहिनों से, वरन देश की सभी महिलाओं से आग्रह करती हूँ कि वे इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ें और उससे लाभान्वित होवें।

अम्बाला | लेखवती जैन,
२० जून. १९३० | (भूतपूर्व एम.एल.सी.)

पँखुरियाँ—

कवियित्रियाँ			पृष्ठ



सौ० लज्जावती जी
विशारद
मेरठ.

आप एक कर्मठ देश सेविका विदुषी हैं। मेरठ की महिला समिति की मनोनीत मंत्रिणी हैं। इन्होंने स्त्रियोपयोगी कई पुस्तकें लिखी हैं। आप श्रीयुत बाबू जगदीशप्रसाद जी ओवरसियर की धर्मपत्नी हैं।

उपासना का प्रथम काल था पूजा का सामान न था।
इन प्राणों की वीणा को जब लय का ध्वनि का ध्यान न था॥

रत्न प्रसूता पावन धरणी
मंगल करणी संकट हरणी
अमृत झरणी तारण तरणी
यह प्राणिमात्र को सुखमय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

उन्नत भाल हिमालय शोभित
शुभ्र तुषार मुकुट मन मोहित
चरण सिन्धु धोता हर्षित चित
इसका उज्ज्वल यश अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

निर्मल गङ्गा जमुना का जल
तृप्त कर रहा है अन्तस्तल
सुख उपजाता श्यामल अंचल
'लज्जा' संयम का संचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

मैं इस शून्य प्रणय वेदी पर
किन चरणों का ध्यान करूँ
मृत्यु कूल पर बैठी कैसे
अमर क्षितिज निर्माण करूँ

विश्वासों पर बसा हुआ है
जग के स्वप्नों का संसार
सखी भाग्य की अस्थिरताओं
पर किसका आह्वान करूँ

मेरी मार्गहीन यात्राएँ
हैं अलक्ष्य गतिहीन सखी
यह मग में करुणा के टुकड़े
छोड़ इन्हें मत बीन सखी

फूल सुगन्धित तू चुन ले
शूलों से भर मेरी झोली
पर आशा लतिका की मादक-
तर स्मृतियां मत छीन सखी

उपासना का प्रथम काल था
पूजा का सामान न था
इन प्राणों की वीणा को
जब लय का, ध्वनि का ध्यान न था

महामिलन की तान छिड़ी थी
कम्पित थी मेरी झंकार
आत्मार्पण की बेला में
मुझको अपना भी ज्ञान न था

जागृति के उज्ज्वल मन्त्रों से
जीवन सूत्र पिरोलो
देश-भक्ति की त्याग-तुला पर
अपना जीवन तोलो

कर्म–क्षेत्र में लेकर आओ
वह स्वप्नों का जीवन
आदर्शों में परिणत हो फिर
शून्य भावना पावन

तन–मन–धन न्यौछावर करके
माँ के बन्धन खोलो
अर्पण हँस हँस कर हो जाओ
भारत की जय बोलो

मानस में सरसिज विकसाऐं
प्रेम एक्यता में बँध जायें
खोये गौरव को फिर पायें
ऐसी जीवनधार बहाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

सोई नारी जाति जगाऐं
उन्नति मे नित लगन लगाऐं
जीवन में नव रस सरसाऐं
झुके शीश को पुनः उठाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

अबलाऐं सबला बन जायें
कायरता को दूर भगायें
कष्टों में न कभी घबराऐं
'लज्जा' यश गौरव प्रगटाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

—श्री० लज्जावती 'विशारद'

प्रिय न आये पिऊँ कब तक
यह निरन्तर धैर्य प्याली
व्यथित मन कैसे मनाऊँ
इस तरह अब कहो आली

हृदय दीपक हाथ मे ढक
चिर समय मे जी रही हूँ
मिलन की आशा रखे
समता सुधा रस पी रही हूँ

किन्तु समता सहचरी भी
ऊब कर मुझसे किनारा
कर गई अब, है न मुझको
कोई जीने का सहारा



सौ० कमलादेवी,
राष्ट्रभाषा कोविद,
सूरत.

आप एक समाज सुधारक सुशिक्षित महिला हैं। आपने धर्म में विशारद, न्याय में मध्यमा और हिन्दी में राष्ट्रभाषा कोविद की योग्यता प्राप्त की है। आप लब्ध प्रतिष्ठ श्रीमान पं० परमेष्ठीदासजी न्यायतीर्थ की धर्मपत्नी हैं। आपकी रचनाएं काफी भावपूर्ण होती हैं।

टिमटिमाता दीप यह बतला सखी कैसे बचाऊँ।
आश का अब डाल अञ्चल ओट में कैसे छिपाऊँ॥

तप्त तन की ऊष्म आहें
हृदय दीपक को बुझाने
कर रही हैं यत्न भरसक
आज इस पर विजय पाने

टिमटिमाता दीप यह
बतला सखी कैसे बचाऊँ ?
आश का अब डाल अंचल
ओट में कैसे छिपाऊँ ?

भारत मां का भवन मनोहर
विस्मय युक्त कलाओं का घर
वीर वरों का सागर सुन्दर
प्राणिमात्र को यह सुखमय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

राज जिन्होंने दिया सत्य पर
बिके स्वयं चण्डालों के घर
हुये यहां पर ही ऐसे नर
दानी हरिश्चन्द्र की जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

सूर्य अहिंसा का चमकाया
शिवपुर का सोपान बताया
ज्ञान—सुधा का पान कराया
बुद्ध वीर का यश अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

पर-हित में निज सुत दे डाला
उर से मोहममत्व निकाला
पहनी सुरभित यश की माला
कुन्ती विदुला ने निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

वीर रमणियों से परिपूरित
उज्ज्वल यश पुष्पों में सुरभित
था यह भारत देश सुशोभित
इसमें फिर वह अरुणोदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

फिर वह सोई ज्योति जगाएँ
हम उन्नत आदर्श दिखाएँ
भारत की महिमा प्रगटाएँ
जग को फिर इसका परिचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

तन-मन-धन को क्षणिक जानकर
आज़ादी का मूल्य मानकर
भारत पर जीवन प्रदान कर
विजय प्राप्त करलें निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

खोये गौरव को फिर पाएँ
जग में जय सौरभ महकाएँ
मरकर आज अमर होजाएँ
हम स्वदेश सेवा में लय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

हम थीं धीर-वीर महिलायें
पर अब कहलातीं अबलायें
इस कलंक को शीघ्र मिटायें
करके अब कायरता का क्षय
जीवन बने हमारा निर्भय

पग उन्नति की ओर बढ़ाएँ
जीवन को नित सफल बनाएँ
निर्बलता को दूर भगाएँ
करें नित्य साहस बल संचय
जीवन बने हमारा निर्भय

फिर अब साहस संचय करके
पूर्ण विजय का निश्चय करके
भारत अवनति का क्षय करके
चमकादें उन्नति अरुणोदय
जीवन बने हमारा निर्भय

गईं आज महिलाएँ जाग
भड़की पूर्ण क्रान्ति की आग
धो देंगी कायरता दाग
संचय करके शक्ति महान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

बाधायें जितनी आयेंगी
उन्हें हर्ष—युत अपनायेंगी
कभी न प्रण से डिग पायेंगी
करके विघ्नों का सम्मान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

अपना देश स्वतंत्र करेंगी
महिलाओं का कष्ट हरेंगी
देश—जाति में शक्ति भरेंगी
अर्पण कर तन—मन—धन—प्राण
हँस—हँस कर होंगी बलिदान

पूर्व नारियों में था जितना
विद्या बल साहस संचार
उतनी आज बनीं हम कायर
अपना शुभ कर्तव्य विसार

थीं बहिनें प्राचीन समय की
धीर वीर गुण की भण्डार
आज अधीर बनीं उतनी हम
गुण का लेश? रहा न लगार

जागें फिर हम सब महिलायें
करने को अपना उद्धार
स्वतंत्रता के हेतु रहें
जीवन तक देने को तैयार

कंटकमयी मार्ग काटें सब
किंचित भी न रहें सुकुमार
जाग गईं अब हम महिलाएँ
करके नव जीवन स्वीकार

वीर रमणियों की गाथायें
ध्रुव बल से परिपूर्ण भुजायें
आत्मत्याग बलिदान क्रियायें
पुनः विश्व को याद दिलाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

निर्मल ज्ञान सुधा को पीकर
आत्मशक्ति के बल पर जीकर
उन्नति गिरि की उच्च शिखापर
ज्ञानऽवलम्बन से चढ़ जाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

भीगे अवनति हिम के जल में
पड़े हुये जो कंपित थल में
उन्नति रवि किरणें उस दल में
फैला उन्हें शान्ति पहुंचाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

रम्य शुभ्र नव यश के तारे
चमका दो जग में रत्नारे
युग-युग में हों गान तुम्हारे
यश का कोष आज भर जाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

उन्नति रवि के नव विकास में
रश्मि रमा के मधुर हास में
इसके जग मोहक प्रकाश में
निज मस्तक ऊँचा कर जाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

श्री० कमलादेवी सूरत.

स्याद्वाद का सूर्य उदय हो
धर्मोन्नति में नित्य विजय हो
सीखें धर्म हेतु मर जाना
अब हमने जीवन पहिचाना

सदा सादगी को अपनायें
नित फिज़ूल खर्ची न बढ़ायें
धारें नित्य स्वदेशी बाना
अब हमने जीवन पहिचाना

मिल कर हम सारी महिलाएं
जाग्रति का झण्डा फहरायें
फिर दुर्लभ मान वतन पाना
अब हमने जीवन पहिचाना

सौ० शान्तीदेवी जी 'शान्ति'

गोंदिया सी. पी.

आप सिंघई कन्हैयालाल जी की विदुषी पुत्री हैं.
स्कूल छोड़ने के बाद पिताजी के पास
ही इतना अध्ययन किया है।
आपका विवाह
अकलतरा सी० पी० के
मोती लाल कुन्दी लाल जी के यहाँ
हुआ है। आप बहुत योग्य महिला हैं।

आज हुई हैं हम बल हीना
ठीक न यह विष प्याला पीना

सुन्दर भारत देश हमारा
है हमको प्राणों से प्यारा
इसपर जीवन अर्पित सारा
भूपर इसका यश अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

पुष्प कमल सा है यह विकसित
देख देख शोभा इसकी नित
हृदय कली होती आनन्दित
दिव्य रूप लख सुख संचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

किन्तु हुआ यह हाय पराया
नहीं रही वह सुखदा माया
अब विदेशियों ने अपनाया
भगवन् यह जग में दुर्जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

दीप ज्योति जगमगा रही है
रजनी का तम मिटा रही है
तारों को भी लजा रही है
स्वर्ग आज आया भूतल पर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

इसी पुण्यतिथि के अवसर पर
जग उद्धारक वीर जिनेश्वर
चार अघाती कर्म नाश कर
मुक्ति लक्ष्मिको लिया प्राप्त कर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

ज्ञान अलौकिक प्राप्त किया था
जग जड़ता का नाश किया था
जीवों को उपदेश दिया था
ज्योति ज्ञान की फैली घर घर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

भारत में छाया अज्ञान
फैला है दारिद्र महान
अपढ़ बहुत थोड़े गुणवान्
हँस हँस कर होंगी बलिदान

प्रांत प्रांत में नगर नगर में
ग्राम गली में ग्रह मंदिर में
फैली फूट महा दुखदान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

बालक वृद्ध विवाह रचाते
बेटी का सौभाग्य डुबाते
कर कुरीतियों का सम्मान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

महिलाएं भूलीं निज साहस
लिया रूढ़ियों ने इनको ग्रस
सहती हैं हरदम अपमान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

बुद्धिमान हम कहलाती थीं
निशि दिन नव गौरव पाती थीं
अब यह कैसी दशा विचारो
जीवन का आदर्श निहारो

आज हुई हैं हम बल हीना
ठीक न यह विष-प्याला पीना
आओ नम अज्ञान निवारो
जीवन का आदर्श निहारो

विद्या की वीणा ले कर में
ऐक्य हार डालो अन्तर में
सत्य शील संयम तप धारो
जीवन का आदर्श निहारो

यश चमके बनकर ध्रुव तारा
है यह अनुपम रत्न तुम्हारा
इस पर वारो जीवन सारा
कामुक के उर मार कटारी
शील सदा पालो सुखकारी

शील पाल कर कुष्ट हटाया
कामदेव सा रूप बनाया
मैना ने पतिव्रत दर्शाया
धन्य धन्य है वह सुकुमारी
शील सदा पालो सुखकारी

नीच प्रकृति को दूर हटाओ
काम लालसा मार भगाओ
पतिव्रता बन कर सुख पाओ
तुम हो शक्तिमयी अघहारी
शील सदा पालो सुखकारी

महा मूल्य मानव तन पाया
किन्तु न इसको सफल बनाया
अज्ञानी बन समय गँवाया
पर बहिनों अब तो जग जाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

जगती भूषण देश दिवाकर
भारत भू सुन्दर रत्नाकर
धन धान्यादिक युक्त सुधाकर
आकर इसे स्वतन्त्र बनाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

अन्य सभी महिलायें जागीं
परहित उन्नति में अनुरागीं
पर हम सब जड़ता में पागीं
शिक्षित बन जड़वाद भगाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

है आदर्श तुम्हारा उज्ज्वल
बहता सदा प्रेम जल निर्मल
व्रत पालन में गिरिसम निश्चल
दान शील बन कर यश पाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

यदि उन्नति में दोगी तन मन
फूल उठेगा भारत उपवन
आनन्दित होगा नव जीवन
विश्व धर्म जग में फैलाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

—सौ॰ शान्तिबाई, गोंदिया

भारत है महिमामय अविचल
ज्ञानधार बहती है निर्मल
जग में है इसका मुख उज्वल
सुयश कीर्ति यह नित अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

इसने विश्व प्रेम उपजाया
ओज और साहस सरसाया
उन्नति का झण्डा लहराया
यह सारे जग में दुर्जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

इसे पूर्व सतियों ने नित नित
बल विद्या से किया सुशोभित
सत्य शील संयम अभिमंडित
जग में यह फिर महिमामय हो
जय हो फिर भारत की जय हो



सौ० गंदाबाई जी
'चन्द्रिका'

आप एक होनहार महिला रत्न हैं। आप हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी भी पढ़ी लिखी हैं: इन्हें संगीत और चित्रकारी का खासा ज्ञान है आप सिंघई श्री० परमानन्द जी खुरई सी० पी० की सुपुत्री तथा श्रीयुत बाबू शान्तिलाल जी बी. ए. राजनाद गाँव स्पिनिंग मास्टर (बंगाल नागपुर काटन मिल्स लि०) की धर्म पत्नी हैं।

वीर रमणियाँ आगे आएं
भारत पुनः स्वतन्त्र बनाएं

भरी कला कौशल है सुन्दर
साहस का बहता है निर्झर
चमक रहा है बनकर दिनकर
इसका जीवन फिर सुखमय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

इसने दया धर्म बरसाया
पाठ अहिंसा का सिखलाया
सबको अपने गले लगाया
अविचल इसका यह निश्चय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

गौरवशाली देश हमारा
निर्मल अनुपम विजय सितारा
है उन्नत नभ का ध्रुवतारा
अब फिर इसका अरुणोदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

पर्वत सरिताएं सुखकारी
हरी भरी ऋतूओं की क्यारी
पुष्प लताएं प्यारी प्यारी
इसकी यह शोभा संचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

वीर रमणियाँ आगे आएं
कर्म और कर्त्तव्य दिखाएं
भारत पुनः स्वतंत्र बनाएं
इसका दुनियां को परिचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

यद्यपि नारी जीवन पाया
तो इसको क्यों व्यर्थ गँवाया
यह कैसा अज्ञान विचारो
जीवन का आदर्श निहारो

नारी को निंदित मत जानो
तीर्थंकर की जननी मानो
नारि शक्ति जग में विस्तारो
जीवन का आदर्श निहारो

अंतस्थल में साहस लाओ
नारि जाति का यश चमकाओ
नस नस में जीवन संचारो
जीवन का आदर्श निहारो

मोक्ष आज प्रभुवर ने पाया
हुये अवतरित हर्ष बढ़ाया
स्वर्गिक सुख भूपर दर्शाया
ज्ञान दीप में जगा चराचर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

पुनः हृदय दीपक चमकाया
ग्रह ग्रह में आनन्द बढ़ाया
साहस सोया हुआ जगाया
स्वागत है आनन्द सरोवर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

वीर प्रभो के नित गुण गाओ
दुर्व्यसनों को दूर भगाओ
पूजन ज्ञान भरो हर्षाओ
बन कर सच्चे धर्म दिवाकर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

तुम में है आदर्श अपार
भरो ज्ञान का नव भण्डार
जिस से अपना हो उद्धार
जीवन क्यों खोतीं बेकार

भरो हृदय में शक्ति अपार
डूब रही हो क्यों मँझधार
करो अविद्या का संहार
जीवन क्यों खोतीं बेकार

चेतो चेतो आलस त्याग
हो स्वदेश का नित अनुराग
तन मन धन दो इस पर वार
जीवन क्यों खोतीं बेकार

उत्तम जीवन दुख में खोतीं
तम-अज्ञान नींद में सोतीं
किंतु उचित है अब जग जाना
अब हमने जीवन पहिचाना

बल विद्या गुण को चमकाना
कभी न संकट में भय खाना
नारि जाति कर्त्तव्य निभाना
अब हमने जीवन पहिचाना

जग में प्रेम सुधा बरसाना
झण्डा भारत का फहराना
शत्रु देख कर मत कुम्हलाना
अब हमने जीवन पहिचाना

—सौ॰ गेंदाबाई 'चंद्रिका' राजनांदगांव ।

कुमारी विद्यावती देवी 'प्रभाकर'

आप श्रीमान बाबू उग्रसैन. एम.ए.: एल.एल.बी. रोहतक की विदुषी पुत्री हैं. आपने 'प्रभाकर' की योग्यता प्राप्त की है.

भारत की ललनाएं जागें।
देशोन्नति पथ पर अनुरागें॥

ज्ञान सूर्य इसने चमकाया
परम अहिंसा धर्म बताया
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ाया
इसका यश जग में अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

उत्तर में हिम-आलय सुन्दर
दक्षिण चूमें चरण समुन्दर
गङ्गा जल बहता है सुख कर
भूमि पुनः वह कञ्चनमय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

प्रगटे इसी देश में गाँधी
दूर भगाई हिंसा आँधी
क्रांतिमयी मर्यादा बाँधी
सत्याग्रह का ध्रुव निश्चय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

सीता ने पतिव्रत दर्शाया
अग्निकुन्ड को नीर बनाया
सुर नर किन्नर ने यश गाया
महिला जीवन महिमामय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

प्रेमपाठ सीखें सिखलाएँ
प्राणीमात्र को सम अपनाएँ
जिनवाणी अमृत बरसाएँ
यह फिर से उन्नत निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

आज बना यह देश भिखारी
धन दौलत सब लुटी हमारी
शिल्पकला बिन है बेकारी
धन बल का फिर संचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

भारत की ललनायें जागें
मिथ्या रूढ़िवाद को त्यागें
देशोन्नति पथ पर अनुरागें
पग-पग पर फिर विद्यालय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

भारत देश हमारा उज्ज्वल
गंगाजल इसका अति निर्मल
हिम आलय उत्तर में निश्चल
इसका गौरव फिर चमकाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

मोहन गाँधी गुण गण आगर
दया शान्ति के निर्मल सागर
भारत गौरव विश्व उजागर
उनको निज आदर्श बनाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

मोती बोस जवाहर पण्डित
आत्म शक्ति गुण से अभिमंडित
छाई यश वल्लरी अखण्डित
वीरो ! उन जैसे बन जाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

कर स्वतन्त्रता का दृढ़ निश्चय
बढ़ो कष्ट सह होकर निर्भय
बोलो भारत माता की जय
कर्म क्षेत्र में कदम बढ़ाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

शुष्क देखकर भारत उपवन
कुम्हलाया जाता है नित मन
'विद्या' जीवन से कर सिंचन
इसको फिर सरसब्ज बनाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

—सौ० कुमारी विद्यावतीदेवी 'प्रभाकर'

भारत नूतन शक्ति हमारी
भारत श्रद्धा भक्ति हमारी
भारत पर अनुरक्ति हमारी
इसका जग में अरुणोदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

चरखे से नित नेह लगाना
सेवा भाव हृदय में लाना
देश वेश पर बलि-बलि जाना
जीवन उन्नत महिमामय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

गाँधी ने आदर्श दिखलाया
भारत को मरना सिखलाया
उन्नति का झण्डा लहराया
विचरो तुम इस में निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो



सौ० मगनश्री
देवी 'मगन'
मंसूरी

आप श्रीमान् ला० दीपचन्द जी सहारनपुर की सुपुत्री हैं तथा श्रीमान ला० महावीर प्रसाद जी (संसारगम बैंक) मंसूरी की धर्मपत्नी हैं।

आप अत्यन्त उन्नत विचारों की उन्नतिशील तथा प्रतिभाशालिनी उदार महिला हैं।

चरखे से नित नेह लगाना।
देश वेश पर बलि बलि जाना॥

अब सब भारत वासी जागें
निश्चय वस्त्र विदेशी त्यागें
सेवा के पथ में अनुरागें
इसका अनुपम यश अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

भारत, नव भारत बन जाये
दुनिया इसको शीश झुकाये
इसकी ध्वज जग में फहराये
यह दृढ़ निश्चय हो, निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

शील धर्म जिसने अपनाया
उसने जीवन सफल बनाया
शील धर्म की महिमा भारी
शील सदा पालो सुखकारी

शील हृदय द्वारा अपनाकर
तन मन धन को करो निछावर
उत्तम बनो शील व्रत धारी
शील सदा पालो सुखकारी

जिसने यह आदर्श कमाया
उसका यश देवों ने गाया
'मगन' हुये किन्नर नर नारी
शील सदा पालो सुखकारी

—सौ॰ मगनश्री देवी 'मगन'



सौ० सीतादेवी जी
'उषा'
अफ्रीका.

आप एक परम उत्साहिनी महिला हैं आपने जैनबाला विश्राम आरा में सात वर्ष शिक्षा पाई तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन किया है आप इटावा निवासिनी हैं और मुजफ्फर नगर के बाबू चेतनलाल जी से विवाहित होकर नैरोबी अफ्रीका चली गई हैं और वहीं से रचनाएं भेजा करती हैं। वहाँ आपके पतिदेव सरकारी उच्च पद पर हैं।

आओ बार बार अभिनन्दन
लो भाई यह रक्षा बन्धन

शील पाल कर नाम कमाया
सर्प गले का हार बनाया
इस पर तन मन धन बलिहारी
शील सदा पालो सुखकारी

मंगल-मय यह शील हमारा
अर्पण इस पर जीवन सारा
जन्म-जन्म के पातक हारी
शील सदा पालो सुखकारी

महिमा तेरी अगम अपारा
मिल सब गायें गान तुम्हारा
ये है उज्ज्वल कीर्त्ति हमारी
शील सदा पालो सुखकारी

सत्य शील संयम अपनाएं
इसके हित हम बलि-बलि जाएं
बनें कदापि न स्वेच्छाचारी
शील सदा पालें सुखकारी

मातृभूमि है हमको प्यारी
हम इस पर होंगी बलिहारी
है यह गुण गरिमा भण्डारी

दुनिया भर में यह दुर्जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

देख दशा भारत की जागें
तज आलस को आयें आगे
वैर विरोध परस्पर त्यागें

जीवन पाये हम निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

मिल कर सब इसके गुण गायें
अपने भारत को अपनायें
इसके कारण बलि-बलि जाएं

नव जीवन का अरुणोदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

प्रेमामृत के घन बरसाना
शुद्ध प्रेम से मन हरषाना
बहिनों पर करुणा दिखलाना
आओ बार-बार अभिनन्दन
लो भाई यह रक्षा बन्धन

यह पवित्र दिन भूल न जाना
प्रेम सहित इसको अपनाना
अवसर पर साहस दिखलाना
प्राप्त तुम्हें नित हो जय वन्दन
लो भाई यह रक्षा—बन्धन

—सौ० सीतादेवी 'उषा' अफ्रीका.

आई हूँ मैं थाल सजा कर
बाँधूँ राखी भैया के कर
करते भाई राज्य निछावर
गातीं बहिनें हो पुलकित मन
लो भाई यह रक्षा—बन्धन

अब रक्षा का भार तुम्हीं पर
वचनबद्ध तुम हुये वीरवर
महिला बहिनों को अपना कर
करो भेंट अपना तन मन धन
लो भाई यह रक्षा—बन्धन

स्वबान्धवों को गले लगाओ
नारी नौका पार लगाओ
प्रेम ध्वजा जग में फहराओ
तभी मिलेगा यश अभिनन्दन
लो भाई यह रक्षा—बन्धन



कुमारी रूपवती जी
किरण
नागपुर.

आप नागपुर के श्री० बाबू लक्ष्मीचन्द जी फागुल अ० सुपरिन्टेण्डेण्ट कोआपरेटिव डिपार्टमेण्ट की विदुषी पुत्री हैं। आप जैन बाला विश्राम आरा की विद्यार्थिनी रही हैं और आपने अनेकों धार्मिक परीक्षाएं दी हैं; आप प्रतिभाशालिनी और प्रखर बुद्धि हैं।

भारत माँ के कष्ट विदारो
डूबी नैया पार उतारो

सदा राष्ट्र को हम अपनाऐं
उसके प्रति हम बलि जायें
होगा तब भारत छबिमान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

ज्योति जवाहर से हो तारे
भारतवासी चेतें सारे
महिलाओं का हो उत्थान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

भारत की ललनाओ जागो
बढ़ो क्षेत्र में निद्रा त्यागो
है सब का इसमें कल्याण
हँस हँस कर होंगी बलिदान

नित्य हृदय की नव अभिलाषा
पूरी हो उसकी यह आशा
प्राप्त हमें हो जय वरदान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

प्रथम यहाँ दिखता दिनकर है
ऋतुऐं यहाँ महासुखकर हैं
सुन्दर से सुन्दर निर्झर हैं
पूज्य प्रकृति माता की जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

सिर पर हिम गिरि धार रहा नित
सागर चरण पखार रहा नित
चन्द्र ज्योति विस्तार रहा नित
यह विशेषताऐं अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

वन्दनीय तू प्यारा भारत
न्याय बन्धु तू प्यारा भारत
अवलम्बन तू प्यारा भारत
अभिनन्दन वन्दन सविनय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

मार्ग वीर ने जो बतलाया
गोतम गण धर ने अपनाया
उसी मार्ग को चित में धारो
जीवन का आदर्श निहारो

हे नव युवकों जल्दी जागो
बहुत हुआ अब निद्रा त्यागो
रिपुओं के दल को संहारो
जीवन का आदर्श निहारो

भारत माँ के कष्ट विदारो
डूबी नैया पार उतारो
अब स्वदेश को पुनः उबारो
जीवन का आदर्श निहारो

हम कर्तव्यहीन हैं सारी
इसीलिये ये दशा हमारी
जाग उठो जग को दिखलाओ
सबला हो सबला बन जाओ

भारत की हम हैं ललनाऐं
देख शत्रु दिल में दहलाऐं
फिर वह चमत्कार दर्शाओ
सबला हो सबला बन जाओ

देशोन्नति में पैर बढ़ाओ
जाति धर्मपर बलि बलि जाओ
रूपा नाम अमर कर जाओ
सबला हो सबला बन जाओ

खोई हुई शक्ति प्रगटा कर
भारत को स्वाधीन बना कर
इस पर हो जाओ न्योछावर
भारत को फिर से सरसाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

हाय हुआ है भारत निर्धन
दे डालो इस पर तन मन धन
भारत हो जावे नन्दन वन
कर्मशीलता तुम दरशाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

धो डालो अपना अन्तस्थल
विश्व धर्म मे करलो उज्ज्वल
बहे दया का श्रोता अविरल
मंजुल धर्म प्रेम सरसाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

तकली से कुछ प्रेम लगा कर
खद्दर के सब वस्त्र बना कर
राष्ट्र जगत में बल दिखला कर
नव जीवन फिर से प्रकटाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

जैसी थीं वे कमला नारी
किया देश पर सब बलिहारी
तुम भी बन जाओ बलधारी
विजय प्राप्त कर ध्वज फहराओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

—कु० रूपवतीदेवी 'किरण' नागपुर.



सौ० मणिप्रभादेवी
'प्रभा'
रामपुर.

आप ही महिलादर्श में कविता-मन्दिर की सञ्चालिका हैं। आप अमरोहा निवासी श्रीमान ला० नन्दकिशोर जी सोनी की पुत्री हैं और कविवर श्री कल्याणकुमार जी 'शशि' की धर्मपत्नी हैं।

यह विचार है कैसे जाऊँ इस सागर के पार
नाथ दया कर तुम बन जाओ मेरी नौका के पतवार

जीवन की नन्हीं नैया
डोल रही है जग जल में
परिवर्तन हो रहे नये
नित जल अञ्चल में

निरख निरख कर नया रूप
इसका पल पल में
नूतन सागर बना एक
इस अन्तस्थल में

कम्पन प्रगट हो रहा मेरे
मन निश्चल में
लक्ष निकट है, लक्ष दूर
है कौतूहल में

यह सोच है कैसे जाऊँ
इस सागर के पार
नाथ दया कर तुम बन आओ
मेरी नय्या के पतवार

प्राची ने स्वर्णिलता पाई
मुझ में भी नव लाली आई
उपवन में कलिका मुस्काई
जीवन के हर एक कोने में
हुआ मधुर संचार

सुन्दर नव जीवन का मधुरस
'प्रभा' पूर्ण मलियानिल का यश
आज हुआ सब का सामंजस
बन्धन विगत हुए छिन्नित हो
खुला मुक्ति का द्वार

मौन मन्द रव में मुस्काया
मुझ पर नव विकास बन छाया
बहुत खोज कर मैंने पाया
अक्षुण्ण सदा रहे यह मेरा
सोने का संसार

जग में ज्ञान सुधा बरसाकर
उन्नति का झण्डा फहराकर
अपना बल साहस चमकाकर
भारत में नव ज्योति जगाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

उज्ज्वल यश जग में चमकाओ
सबलाएँ बनकर दिखलाओ
जीवन का आदर्श बढ़ाओ
अपना देश स्वतन्त्र बनाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

नित उन्नति करने की ठानो
अपना नव जीवन पहिचानो
अपने को निर्बल मत जानो
देश धर्म पर बलि बलिजा ओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

सत्य शील संयम का आकर
दुनिया का आलोक ; प्रभाकर
नव विशेषताओं का सागर
नव जीवन का नव सन्देश
जय जय प्यारा भारत देश

विश्व प्रेम का सुन्दर अंकुर
सदा लोक के हित से आतुर
नमते नित्य इसे किन्नर सुर
लख जग में अनुभूति विशेष
जय जय प्यारा भारत देश

वीरों का जीवित यश अक्षय
ऊँचे मस्तक से गौरवमय
बाधाओं से निश्चल निर्भय
वीरों उज्ज्वल उन्मेष
जय जय प्यारा भारत देश

नाथ सहारा मुझे तुम्हारा
लो मुझको तुम आन उबार
पड़ी हुई हूँ दुख सागर में
जिनवर मेरी ओर निहार

सब जग छान छान कर देखा
पाया इस में मायाचार
अब बस ये ही निश्चय है
प्रभु तुम हो जीवन आधार

तेरे चरणों में आशा है
होगा सम्पूर्ण सुधार
मथ कर बाधाओं को तुम पर
आ पहुँची हूँ किसी प्रकार

मैं केवल छोटा रजकण हूँ
तुम हो नाथ दया भण्डार
सरिताऐं सागर में मिल कर
बनती हैं गम्भीर अपार

—सौ० मणिप्रभा देवी 'प्रभा'

रूढ़ि वाद अज्ञान तजेंगी
सारे जग में क्रान्ति भरेंगी
नारि जाति उत्थान करेंगी
अब न रहेंगी हम बल हीन
भारतवर्ष बने स्वाधीन

कहते सब हमको अबलाऐं
उनका यह भ्रम आज मिटाऐं
सबला बन उनको दिखलायें
दिखला अपनी शक्ति नवीन
भारतवर्ष बने स्वाधीन

कमला जैसी वीर बनेंगी
सत्यवती सी धीर बनेंगी
अपने प्रण मे नहीं डिगेंगी
आलस सब होजाये विलीन
भारतवर्ष बने स्वाधीन

कुमारी प्रेमलता देवी, आरा.

आप जैन-बाला-विश्राम, आरा, की सुयोग्य

और होनहार विद्यार्थिनी हैं और

भाव-पूर्ण रचनाएं लिखती हैं.

आओ भाई आगे आओ
प्रेमपूर्ण राखी बँधवाओ
आने में तुम नहीं लजाओ
यह है दृढ़तर प्यारा बन्धन
लो भाई यह रक्षा-बन्धन

विश्वादर्श भ्रात बन जाना
शूर वीरता मन में लाना
भारत को फिर स्वर्ग बनाना
जीवन बन जाये नन्दन-वन
लो भाई यह रक्षा-बन्धन

राखी का यह मूल्य चुकाना
विश्व शान्ति सुख पूर्ण बनाना
उजड़ा चमन पुनः सरसाना
करदो दूर देश का क्रन्दन
लो भाई यह रक्षा-बन्धन

प्यारी बहिनो निद्रा त्यागो
नहीं अविद्या में अनुरागो
कुछ दुनिया में कर दिखलाओ
सबला हो सबला बन जाओ

देश-देश में घर-घर फिर कर
करना ज्ञान प्रचार निरन्तर
जग को शिक्षा पूर्ण बनाओ
सबला हो सबला बन जाओ

सभी जाति करती हैं उन्नति
किन्तु तुम्हारी होती अवनति
अब अपना कौशल दिखलाओ
सबला हो सबला बन जाओ

जीवन ही जीवन मत जानो
जीवन की कीमत पहिचानो
मर कर नव जीवन उपजाओ
सबला हो सबला बन जाओ

—कु० प्रेमलता देवी

सौ० चमेलीबाई जी जौहरी, सागर.

आप श्रीमान् गुलाबचन्द जी जौहरी, सागर की सुयोग्य
पुत्री हैं तथा श्रीमान् बाबू भाग्यचन्द्र जी बामौरा
की धर्मपत्नी हैं। आपको कविता में
बड़ा प्रेम है और अच्छी
रचनाएं लिखती हैं।

भारत भव्य भवन सुन्दर है
शिखर हिमालय अति सुखकर है
राष्ट्र पताका पूर्ण प्रखर है
भारत मां की छवि अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

भारत सब देशों में आगे
रहा सर्वदा गुण अनुरागे
विद्या बल कौशल में आगे
बाणिज विद्या धन सञ्चय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

सीता सावित्री सम नारी
मैना द्रौपदि औ गंधारी
लक्ष्मी दुर्गावति बलधारी
प्रगटें फिर भारत निर्भय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

वीरों ने भारत चमकाया
गाँधी वीर जवाहर पाया
भारत माँ का मान बढ़ाया
हे प्रभु इनमें दृढ़ निश्चय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

दिव्य ज्योति जग में प्रगटाएँ
अपना अद्भुत यश चमकाएँ
नित्य स्वदेशी को अपनाएँ
राष्ट्र पताका नित दुर्जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

निज कर्तव्य कभी न भुलाएँ
चाहे प्राण भले ही जाएँ
निश्चय से उन्नति पथ पाएँ
शुद्ध हमारा यह निर्णय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

भारत भर की सब महिलाएँ
कटि कस समरांगण में आयें
भारत में फिर गुण विकसायें
अधम नरों के बल का क्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

प्रिय बहिनों यह विनय हमारी
हों स्वतन्त्र भारत नर नारी
विनय चमेली की शतवारी
महिलाओं की नितप्रति जय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

उठो उठो प्रगटा है दिनकर
उन्नति पथ पर आगे बढ़ कर
निज कर्तव्य कभी न भुलाना
अब हमने जीवन पहिचाना

सीता मैना सम महिलाऐं
प्रगटें भारत भू जग जाये
संयम शील क्षमा चमकाना
अब हमने जीवन पहिचाना

बहिनों छोड़ो नीच प्रथाऐं
उन्नति पथ में पैर बढ़ायें
उजड़ा भारत फिर सरसाना
अब हमने जीवन पहिचाना

सब मिल कर जगको दिखलाएँ
विश्व गगन में ध्वज फहराएँ
भारत माता के गुण गाएँ
बहिनों मिल कर क़दम बढ़ाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

चलो सदा ही उन्नति पथ पर
उज्ज्वल कीर्ति बढ़े निशि वासर
दुखी जनों के दुःख हर कर
भारत के दुख कष्ट मिटाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

मातृ भूमि हो यश में मण्डित
हिंसक तस्कर हों नित दण्डित
महिला पालें शील अखण्डित
राष्ट्र गीत हर्षित हो गाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

सौ० चमेली बाई, जौहरी सागर।

गत वैभव का गुण गाते हैं
वस्तु विदेशी अपनाते हैं
पराधीन हो दुख पाते हैं
बन्धन बँधे विकट विस्मय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

अन्न वस्त्र बिन झीक रहे हैं
अस्थी पञ्जर दीख रहे हैं
आंखों से दुख नीर बहे हैं
आया कैसा कर्म उदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

दशा देख कर फटती छाती
पत्थर को भी है पिघलाती
करुणा को भी करुणा आती
कम्पित होता देख हृदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

वीर प्रभो अब दया करो तुम
माता के सब कष्ट हरो तुम
साध हमारी पूर्ण करो तुम
धन धान्यादिक निधि अक्षय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

भारत पृथ्वी मात्र हमारी
हम भारत सन्तानें सारी
भारत है सब का कल्याण
हँस हँस कर होंगी बलिदान

हम अपना बल भूल रही थीं
अन्धकार में भूल रही थीं
पर अब कर लेंगी उत्थान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

प्रेम परस्पर हो पग पग में
नव जीवन आजाए जग में
सारा मिटे द्वेष अभिमान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

साहस ऐसा हमें दीजिये
लक्ष्मी जीजी हमें कीजिये
भरिये हम में शक्ति महान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

शिक्षा बिन सदियों से हमने
सहा दुःख आतंक अपार
अन्धकार में पड़ी हुई थीं
जीवन को खोकर बेकार

गहनों, चम चम वस्त्रों में ही
समझा हमने निज संसार
विद्या लिखना पढ़ना हमने
समझा अपने सिर पर भार

रूढ़ि मार्ग के कंटक-पथ में
भटक रही थी मन को मार
अवनति कायरता अपना कर
ढोया हमने जीवन-भार

कठिन यत्न से कुछ बहिनों ने
नारि जाति का किया सुधार
ज्ञान-सूर्य अब उदय हुआ है
मिटा तिमिर अज्ञान अपार

दुखी दीन पर करुणा लाओ
जग-जीवों का दुःख मिटाओ
विश्व-वेदना दूर हटाओ
सबला हो सबला बन जाओ

स्वार्थवासना दूर भगाओ
पाप-पंक के पास न जाओ
निज जीवन को शुद्ध बनाओ
सबला हो सबला बन जाओ

क्षमा सत्य सम भाव बढ़ाओ
क्रोध मान माया विघटाओ
निर्मल स्वच्छ प्रेम वर्षाओ
सबला हो सबला बन जाओ

प्रेम एकता को अपनाओ
समता, दया-भाव दर्शाओ
उन्नति का झण्डा फहराओ
सबला हो सबला बन जाओ

सुभग शील आदर्श हमारा
दिव्य देवियों ने हिय धारा
गूँज रहा यश-सौरभ भारी
शील सदा पालो सुखकारी

कल्पद्रुम का मूल यही है
विश्व सरोवर कूल यही है
ज्ञान सुयश जग में संचारी
शील सदा पालो सुखकारी

पातिव्रत जो धर्म निभातीं
कभी न जीवन में दुख पातीं
कर्म—कलाप—ताप—निरवारी
शील सदा पालो सुखकारी

सौ० रतनीबाई, अमरावती

महावीर भगवान इसी दिन
पाया पद निर्वाण इसी दिन
उत्सव हर्ष महान इसी दिन
खुशी मनाते हैं सब घर घर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

माला दीप्त दीपकों की मिल
करती सुन्दर झिलमिल झिलमिल
हर्षित उछल पड़े सब खिल खिल
उमड़ पड़ा आनन्द-सरोवर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

वीर प्रभो की आज्ञा पालो
उर में प्रेम-प्रदीप जगालो
मन से ईर्षा द्वेष निकालो
हिल मिल कर सब बनो सहोदर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

राखी आई राखी आई
मैं भैया को राखी लाई
भेंट नारियल और मिठाई
करूँ प्रेम से टीका चन्दन
लो भाई यह रक्षाबन्धन

लज्जा बहिनों की रख लेना
समय पड़े पर पीठ न देना
बस इतना है तुम से कहना
इसी लिये करती अभिनन्दन
लो भाई यह रक्षाबन्धन

बहिन तुम्हारी भोली भाली
है तुमसे ही भाग्यशाली
दुष्टों से उनकी रखवाली
करना अपना देकर जीवन
लो भाई यह रक्षा—बन्धन

निज जीवन को सुखद बनाओ
निर्मल धर्म कर्म अपनाओ
निष्ठुरता मन में मत लाओ
सबला हो सबला बन जाओ

ऐक्य भावना जग में भरदो
प्रेमामृत से सिंचन करदो
सहनशील बन कर दिखलाओ
सबला हो सबला बन जाओ

उन्नति का सोपान यही है
सौख्य शांति का पान यही है
नन्दन वन सम सुख उपजाओ
सबला हो सबला बन जाओ

पंकज उन्नति के विकसादो
जग में नव जीवन सरसादो
अबलापन को दूर भगाओ
सबला हो सबला बन जाओ

सुखमय जीवन की इच्छा हो
सब से प्रेम प्रशंसा चाहो
बनो नित्य जग में आभारी
शील सदा पालो सुखकारी

शील धर्म को जिसने धारा
हुआ द्वेष दुख मे छुटकारा
फूली पुण्य कीर्ति की क्यारी
शील सदा पालो सुखकारी

शील धर्म से सीता प्यारी
कौतुक किया जगत में भारी
हुआ अतुल जल शीतल झारी
शील सदा पालो सुखकारी

स्वर्ग मोक्ष का द्वार यही है
सुन्दर सुरभित हार यही है
धारो उर में सब नर नारी
शील सदा पालो सुखकारी

सौ० चम्मी बाई, अमरावती.

यहां निकलता नित्य प्रभाकर
इस पर थे सुरगण न्यौछावर
यह है विश्व-वंद्य विद्या-वर
उसका गौरव यों न गमाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

ब्राह्मी ने ब्रह्मत्व दिखाया
सीता ने सत शील निभाया
लक्ष्मी को चण्डीत्व सुहाया
अब फिर वही रूप प्रकटाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

तीर्थंकर को तुमने जाया
तुमने वीर भाव सरसाया
नित्य उलझनों को सुलझाया
भारत क्यों न स्वतन्त्र बनाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

फैशन का सब भूत भगाकर
वस्तु स्वदेशी ही अपनाकर
चरखे से नित प्रेम बढ़ाकर
भारत नौका पार लगाओ
आओ कुछ करके दिखाओ

नारि जाति अबला कहलाती
पग पग पर दारुण दुख पाती
निर्बलता का भार उतारो
जीवन का आदर्श निहारो

विद्या बिन जीवन दुखदाता
क्रोध कलह विद्वेष विधाता
श्रेष्ठ बनो अज्ञान बिसारो
जीवन का आदर्श निहारो

देश जाति पर बलि बलि जाओ
पामरता पाखण्ड भगाओ
निर्मल वस्त्र विदेशी धारो
जीवन का आदर्श निहारो

सौ० कान्तादेवी 'कौशल'

श्री॰ कान्तादेवी जी 'कौशल' देहली.

आप साहित्य रत्न पं॰ हीरालाल जी

की धर्मपत्नी हैं और सुन्दर

रचनाएं लिखती हैं।

आओ भारत बहिनो आओ
अपनी अनुपम शक्ति जगाओ
जग को अपना शौर्य दिखाओ
सबला हो सबला बन जाओ

अब न समय को व्यर्थ गमाओ
भारत को आज़ाद बनाओ
शील रत्न को भी चमकाओ
सबला हो सबला बन जाओ

कायरता को दूर भगाओ
अपने बल को खूब बढ़ाओ
पूर्व नारियों सा बल लाओ
सबला हो सबला बन जाओ

—कु० विद्यावती देवी, आरा

मनुजों ने नीचा दिखलाया
आलस-पथ की ओर झुकाया
बहकाने में अब मत आओ
सबला हो सबला बन जाओ

विनय एकता को अपनाओ
कलह द्वेश मात्सर्य भगाओ
अपना जीवन सफल बनाओ
सबला हो सबला बन जाओ

सीता सोमा द्रौपदि नारी
रयन मजूषा सी गुणधारी
अब तुम वैसी बन दिखलाओ
सबला हो सबला बन जाओ

जग में विश्व-प्रेम फैलाओ
क्षुद्र भावनाएं मत भाओ
जीवन का विस्तार बढ़ाओ
सबला हो सबला बन जाओ

—श्री कु० हीरादेवी, आरा

हो स्वराज्यमय देश हमारा
द्वेष विहीन रहे व्यवसार
शुद्ध भावना रहे हमारी
करे सदा जग का उपकार

दूर रहे नित शुद्ध हृदय से
ईर्षा मत्सर मायाचार
निशि दिन विमल भावना का इस
अन्तस्थल में हो संचार

इसी देश में भीम कर्ण से
रावण राम शक्ति आगार
प्रगटे हैं इस भारत भूपर
जिन के बल का वार न पार

महिलाओं के शून्य हृदय में भी
हो ऐसी शक्ति अपार
जाग उठीं अब हम महिलाएं
करके नव जीवन स्वीकार

—सौ० कस्तूरी देवी, सागर

सोचो बहिनों यह अपने मन
दुर्लभ पाना मानस का तन
तिस पर दया धर्म का पाना
अब हमने जीवन पहिचाना

धर्म जाति के हेतु मरेंगी
भारत का उद्धार करेंगी
यह दृढ़ निश्चय मन में ठाना
अब हमने जीवन पहिचाना

हिंसा झूठ कुशील व चोरी
काम क्रोध की काटें डोरी
जग में जीवन-ज्योति जगाना
अब हमने जीवन पहिचाना

कु० रतनीबाई, सिवनी

जग को तूने ज्ञान सिखाया
आत्म धर्म का पाठ पढ़ाया
सत्य सभ्यता को दिखलाया
विश्व प्रेम का दे उपदेश
जय जय प्यारा भारत देश

आज नींद में तुम क्यों सोती
व्यर्थ समय को तुम क्यों खोती
गौरव गरिमा को क्यों खोती
आज भूल कर ज्ञान विशेष
जय जय प्यारा भारत देश

एक वार हुंकार सुनादो
पड़े नींद में उन्हें जगादो
फिर वह अपना रूप दिखादो
धारण कर वीरों का वेश
जय जय प्यारा भारत देश

– कु० इन्द्रा देवी, महेश्वर

उमड़ उमड़ सुर नर मिल आये
अष्ट द्रव्य भर भर कर लाये
जगमग जगमग ज्योति जलाये
धन्य धन्य यह दिवस तिमिरहर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

मंगलमय यह पर्व मनाओ
मोदक आज सहर्ष चढ़ाओ
लोक मूढ़ता दूर भगाओ
अपनाओ नित धर्म दिवाकर
जय दीपावलि पर्व मनोहर

सौ० सूरजबाई, सिरोंज.

हम हैं जग में श्रेष्ठ प्रधान
अपनी शक्ति गई पहिचान
व्यर्थ कभी हों अब न निदान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

हम हैं महा ज्योति की खान
हम से हुए वीर भगवान
अब न सहेंगी हम अपमान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

शील रत्न से हम गतिमान
वीर शिरोमणि हैं सन्तान
पुनः 'प्रभा' का हो उत्थान
हँस हँस कर होंगी बलिदान

—श्री. प्रभावती देवी 'कुग'

देश धर्म पर मरना सीखो
कर जाओ कर्त्तव्य महान
बहिनो उठ कर आगे आओ
रखलो ललनाओं की शान

याद करो प्राचीन काल की
महिलाओं का वह ! उत्थान
आज तुम्हारा उसी देश में
कैसा हाय हुआ अपमान

शील सत्य को तुम अपनाओ
हो जिसमे कि आत्म कल्यान
एक साथ मिलकर सब गाओ
फिर स्वतन्त्र हो हिन्दुस्तान

—सौ० सुमति रानी, अकलतरा

वीर बनें अबलाएं नारी
सत्य शील की बनें पुजारी
पालें दया-धर्म सुखकारी
गत तम भागे अरुणोदय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

देश हुआ वैभव परिहारी
सम्पतिशाली बना भिखारी
छिनी आज ध्रुव शक्ति हमारी
फिर वह महाशक्ति संचय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

ऐक्य भावनाएं उपजाएं
भारत को स्वाधीन बनाएं
जग में निज झंडा लहराएं
उर में स्वतन्त्रता की लय हो
जय हो फिर भारत की जय हो

—सौ० केशरबाई, सिरोंज

ऐसी शक्ति हृदय में लादो
धीर वीर गम्भीर बनादो
करें देश का हम उद्धार
जिनवर तुम हो तारन-हार

द्वेष ईर्षा दूर हटादो
बैर फूट का नाम मिटादो
अहंकार का कर संहार
जिनवर तुम हो तारन-हार

धर्म ज्ञान की ज्योति जगादो
जगको प्रेम पियूष पिलादो
होवे सुखी सकल संसार
जिनवर तुम हो तारन-हार

यह अभिलाषा है नूतनतर
हम भवसागर से जायें तर
बार बार है यही पुकार
जिनवर तुम हो तारन-हार

—श्री. सतिया बाई, अमरावती

कर्म भूमि में आगे आकर
अपना देश धर्म चमका कर
हरो जगत का प्रेत निशाकर
भारत में गौरव तुम पाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

भारत की सेवा में तन मन
दुखियों की सेवा में अर्पण
न्योछावर करदो हर्षित मन
दया भाव उन पर दर्शाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

जन्म सफल करके दिखलायें
विजय पताकाएं फहरायें
उन्नति का झण्डा लहरायें
भारत में अमृत वरषाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

— श्री० यशोदा देवी, रेवाड़ी

तुमने निज कर्त्तव्य भुलाया
किया नारियों का अपमान
तुमसे थी उन्नति की आशा
आज हुई अवनति की खान

लेकिन अभी समय है बहिनों
क्यों सोती हो बन अज्ञान
दरशाओ आदर्श चेतना
सीता, द्रोपदि आदि समान

उन्नति पथ पर कदम बढ़ाओ
कर्म-क्षेत्र पर हो बलिदान
निर्बलताएं दूर भगाओ
रखलो देश जाति की शान

—सौ० मूलाबाई, अकलतरा

भारतवर्ष गुणों का आगर
सारे देशों में रत्नाकर
दक्षिण में लहराता सागर
इसका गौरव फिर चमकाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

गंगा यमुना नदी सुधा सर
चहुँ दिशि में हो रहीं प्रभाकर
युवक वृद्ध नर नारि चराचर
करके स्नान हर्ष बरसाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

अपना हृदय उदार बनाओ
धर्म अहिंसा नित अपनाओ
मातृभूमि की ध्वज फहराओ
आनन्दित हो मन हरषाओ
आओ कुछ करके दिखलाओ

—श्री. जयमाला देवी, बड़वाहा

क्या कर नहीं सकती भला
यदि शिक्षिता हों नारियां
हम ही अनेकों धर्म रक्षा
कर चुकीं सुकुमारियां

हम धीरता औ वीरता
संसार को दिखलायंगी
फिर आज सारे विश्व में
गौरव सुयश दर्शायंगी

यदि शील और विवेक
लज्जा में निपुण हो जायंगी
तो हम सफल सम्पूर्ण गृह-
जीवन अवश्य बनायंगी

—कु० धर्मवती देवी, लहरपुर

हम अब तक तो परतंत्र रहीं
पर अब स्वतन्त्र बन जायेंगी
फिर प्रेम एकता को भारत में
सभी जगह फैलायेंगी

अब तक बलहीन कहाती थीं
अब बलशालिनि बन जायेंगी
हम बलवानों की पुत्री हैं
वीरांगिनि बन दिखलायेंगी

—श्री· गुणमाला देवी, देहली ।

यह वीर प्रभो का शासन है
नव युग का ध्रुव आश्वासन है
क्षत्रिय जीवन का साधन है
संदेश क्रान्ति का पावन है
कायरता भगाने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

पल भर भी है न गमाने का
आलस में समय बिताने का
है कर्मठता दिखलाने का
स्वातन्त्र पाठ सिखलाने का
गहरी निद्रा खुल जाने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

रण-वीर शिवाजी का बाना
राणा प्रताप सा यश पाना
प्रण भीष्म समान निभा जाना
निज गौरव हित मिट-मिट जाना
यह रण सन्देश सुनाने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

सौ० चन्द्रप्रभा देवी, इन्दौर.

आप लब्ध प्रतिष्ठ रावराजा राज्यरत्न सर सेठ श्रीमान्
हुकमचन्द जी इन्दौर की श्रेष्ठ शिक्षा-प्राप्त
विदुषी सुपुत्री हैं। आपको कविता से
अत्यन्त प्रेम है यह 'रणभेरी'
इनकी सफल और प्रतिभा-
पूर्ण रचना है।

मिथ्या धर्मों का नाश किया
जिन आगम सूर्य प्रकाश किया
बलि वेदी पर सिर चढ़ा दिया
अकलङ्क भाव को पूर्ण किया
सद्धर्म प्रेम दर्शाने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

तुम नव जवान हो ध्यान रहे
नस-नस में साहस भान रहे
निज देश धर्म की शान रहे
उन्नति का श्रेष्ठ वितान रहे
संगठन शंख बज जाने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

वीरो ! भारत का मान रहे
भारत वीरों की खान रह
माता बहिनों की लाज रहे
सद्गुण पूरित सब साज रहे
पहिले की स्मृति हो आने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

उज्ज्वल भारत की शान तुम्हीं
अरमान तुम्हीं अभिमान तुम्हीं
दुखिया माता के प्राण तुम्हीं
सर्वस्व तुम्हीं उत्थान तुम्हीं
यह भाव पुनः बिखराने दो
रण-भेरी मुझे बजाने दो

—सौ० चन्द्रप्रभा देवी, इन्दौर ।